बेल की अच्छी किस्में और उनमें लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

कृषि कुंभ (जुलाई 2023),
खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 128–131

बेल की अच्छी किस्में और उनमें लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

रवि कुमार रजक एवं ओम नारायण
शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग, शोध छात्र, फल विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय
कुमारगंज, अयोध्या उतर प्रदेश–224229, भारत।
Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय

बेल फल भारत के प्राचीन फलों में से एक फल है। और बेल फल के लिये कहा गया है कि रोगान बिलति भिनन्ति इतिइा बिल्ब अर्थात इसका सीधा मतलब यह होता है। कि जो फल रोगों का नाश

करे वह फल बेल कहलाता है। और बेल फल की जड़, छाल, पत्ते शाखॅाऐ और फल औषधि रूप में मानव जीवन के लिये अहुत ही उपयोगी हैं। और प्राचीन काल से बेल को 'श्रीफल' के नाम से जाना जाता है। और बेल फल विभिन्न प्रकार की बंजर भूमि जैसे ऊसर, बीहड़, खादर, शुष्क एवं अर्धशुष्क भूमि में उगाया जा सकने वाला फल है। और इसमें पोषण (विटामिन–ए, बी.सी., खनिज तत्व, कार्बोहाइड्रेट) एवं औषधीय गुणों से भरपूर फल है। और इस फल से अनेक प्रकार के पदार्थ जैसे (शरबत, मुरब्बा) बनाया जा सकता है। लेकिन झारखंड के पठारी क्षेत्रों में जहाँ अन्य फलदार पौधे नहीं उगाये जा सकते हैं। ऐसी जगहों पर बेल की खेती की अपार सम्भावनायें होती हैं, क्योंकि यह एक बहुत ही सहनशील वृक्ष है। और मई–जून की गर्मी के समय इसकी पत्तियाँ झड़ जाती है, जिससे पौधों में शुष्क एवं अर्धशुष्क जलवायु को सहन करने की क्षमता बढ़ जाती है। झारखंड राज्य की सभी जिलों में बेल की खेती की जा सकती है परन्तु बोकारो, कोडरमा, धनबाद, गिरिडीह, देवघर, चतरा, गढ़वा, लातेहार,राँची एवं हजारीबाग में इसकी व्यवसायिक खेती की जा सकती है।

बेल की किस्में

बेल की अनेक स्थानीय किस्में हैं परन्तु हाल के वर्षो में नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी कृषि विश्वविद्यालय कुमारगंज आयोध्या, और गोविन्द बल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय पंतनगर, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान एवं बागवानी एवं कृषि वानिकी शोध कार्यक्रम द्वारा चयनित कुछ प्रमुख किस्मों का संक्षिप्त विवरण निम्न है:

नरेन्द्र बेल 5 – इस किस्म के पौधे कम ऊँचाई वाले (3–5 मी.) एवं अधिक फैलाव वाले होते हैं। और इस किस्म के फल चपटे सिरे वाले, मध्यम आकार के मीठे स्वाद वाले तथा कम बीज वाले होते हैं। और इसमें गूदा कम, रेशे वाले, मुलायम और अच्छे स्वाद वाले होते है। और इसके फलों का औसत वजन 900–1000 ग्राम तक होता है तथा इसके पेड़ों की औसत उपज 50–60 कि.ग्रा. प्रति पेड़ तक पायी जाती है।

नरेन्द्र बेल 7 – इस किस्म के पौधों की औसत ऊँचाई 5–7 मी. तक होती है और यह कम फैलाव वाले 3–5 वर्ग मी. में होते हैं। और इसके फल गोल तथा काफी बड़े होते हैं। जिनका का औसत वजन 3–4.5 कि.ग्रा. तक पाया जाता है।

नरेन्द्र बेल 9 – इस किस्म के पौधे मध्यम ऊँचाई वाले एवं अधिक फैलाव वाले होते है। और इसके फल आकार में बड़े अंडाकार तथा अधिक मिठास वाले होते है। और इसके फलों का औसत वजन 1.1.5 कि.ग्रा. तक होता है तथा छिलका पतला होता है। और गूदे में रेशे एवं बीज की मात्रा कम पायी जाती है। और इसके पेड़ों की औसत उपज 70–80 कि.ग्रा. प्रति वृक्ष तक प्राप्त की जा सकती है।

पंत सिवानी – इस किस्म के पेड़ ऊपर की तरफ बढ़ने वाले एवं घने होते हैं। और इसका फल अंडाकार लम्बा, भार 1. 2–2.0 कि.ग्रा. छिलका मध्यम पतला होता और इसमें गूदे की मात्रा लगभग 70–75 प्रतिशत तक होती है। और इसमें रेशा कम, मिठास अधिक एवं स्वादिष्ट होता है। और इसके पेड़ों की औसत उपज 50–60 कि.ग्रा. प्रति वृक्ष तक पायी जाती है।

पौधा प्रवर्धन –

बेल के पौधे मुख्य रूप से बीज द्वारा तैयार किये गये मूलवृंत पर कालिकायन या ग्राफ्टिंग द्वारा बनाये जाते हैं। और बीजों की बुवाई फलों से निकालने के तुरन्त बाद 15–20 सें.मी. ऊँची 1 –10 मीटर आकार की क्यारियों में 1–2 सें.मी. गहराई पर कर देनी चाहिये। और इसकी बुवाई का सबसे अच्छा समय मई–जून का महीना होता है। और इसकी कलिकायन के लिए 1–2 वर्ष पुराने पौधे उपयोग गये है। और जून–जुलाई माह में पैबंदी चश्मा विधि से 80–90 प्रतिशत तक इसमें सफलता मिलती है और सांकुर डाली की वृद्धि भी बहुत अच्छी होती है। और जब कलिका ठीक प्रकार से फुटाव ले ले तो मूलवृंत को कलिका के ऊपर से काट देना चाहिए।

शिखर रोपण –

बेल के पुराने बीजू पौधों को कलमी पौधों में बदलने के लिये चोटी कलम बाँधना

चाहिये। और इसके लिये पेड़ की मोटी शाखाओं की जमीन से (2.5–3.0 मी.) ऊँचाई पर मार्च में शिखर से काट कर उस हिस्से को गीली मिट्टी और टाट से ढक देते हैं। तब इन कटे हुए भागों से नई शाखाएं निकल कर कलम बाँधने योग्य हो जाएं तो उन पर जून–जुलाई में कलिकायन कर दिया जाता है। जब कलिकाएँ अच्छी तरह से फुटाव ले लेती है तब पुरानी शाखाओं को ऊपर से काट दिया जाता है।

गड्ढे की तैयारी एवं पौध रोपण –

बेल के पेड़ों को 6–8 मीटर की दूरी पर जुलाई–अगस्त माह में लगाया जाता है। और पौधे लगाने के एक माह पूर्व 60 60 60 सें.मी. आकार के गड्ढे तैयार कर लेते है। और यदि जमीन में कंकड़ पत्थर की तह हो तो उसे निकाल देना चाहिए। और गड्ढों में 3–4 टोकरी सड़ी हुई गोबर की खाद, 20–25 कि.ग्रा. बालू तथा 1 किलोग्राम चूना मिलाकर 6–8 इंच ऊँचाई तक भर देना चाहिए और इन्ही तैयार गड्ढों में जुलाई–अगस्त माह में पौध रोपण करना चाहिए। और पौधे लगाने के बाद हल्की सिंचाई करना अच्छा होता है। और सूखे क्षेत्रों में स्वस्थानिक विधि से बाग लगाना उपयुक्त पाया गया है।

खाद एवं उर्वरक

बेल के पौधों की अच्छी बढ़वार, और अधिक फलन एवं पेड़ों को स्वस्थ रखने के लिये प्रत्येक पौधे में 10 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद, 50 ग्रा. नत्रजन, 25 ग्रा. फास्फोरस एवं 50 ग्रा. पोटाश प्रति वर्ष प्रति वृक्ष डालनी चाहिए। और खाद एवं उर्वरक की यह मात्रा दस वर्ष तक गुणित अनुपात में बढ़ाते रहना चाहिए। और इस प्रकार 10 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले वृक्ष को 500 ग्राम नत्रजन, 150 ग्राम फास्फोरस और 500 ग्राम पोटाश के अतिरिक्त 30–40 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद डालना अच्छा माना जाता है। और पठारी भूमि में लगाये गये पौधों में प्रायः जस्ते की कमी के लक्षण दिखाई पड़ते हैं। अतः ऐसे पेड़ों में 250 ग्राम जिंक सल्फेट प्रति पौधे के हिसाब से उर्वरकों के साथ मिलाकर डालना चाहिये या 0. 5 प्रतिशत जिंक सल्फेट का पर्णीय छिड़काव जुलाई, अक्टूबर व दिसम्बर माह में करना चाहिए। और खाद एवं उर्वरकों की पूरी मात्रा जून–जुलाई में डालनी चाहिए। और नये पौधों को स्थापित करने के लिए एक दो वर्षो तक सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। और लगाए हुए पौधे बिना सिंचाई के भी अच्छी तरह से रह सकते है। और गर्मियों में बेल का पौधा अपनी पत्तियाँ गिराकर सुषुप्ता अवस्था में चला जाता है और इस तरह यह सूखे को सहन कर लेता है।

पौधों की संधाई, और छंटाई

बेल के पौधों की सधाई का कार्य शुरू के 4–5 वर्षो में करना चाहिए। और मुख्य तने को 75 सें.मी. तक शाखा रहित रखना चाहिए। और इसके बाद 4–6 मुख्य शाखायें चारों दिशाओं में बढ़ने देनी चाहिए। और बेल के पेड़ों में विशेष छंटाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है परन्तु सूखी, कीड़ों एवं बीमारियों से ग्रसित टहनियों को समय–समय पर निकालते

रहना चाहिए। और शुरू के वर्षो में नये पौधों के बीच खाली जगह में अंतः फसल लेते समय ऐसी फसलें न लें जिन्हें पानी की अधिक आवश्यकता हो और वह बेल के पौधों को प्रभावित करें। और अच्छी फसलें लगाकर उन्हें वर्षा ऋतु में पलट देने से भूमि की दशा में भी सुधार किया जा सकता है।

बेल के कीट और उनकी रोकथाम

नींबू की तितली और बेल के फल की मक्खी इसके मुख्य कीट है।

नींबू की मक्खी: यह पपीलियो डेमोलियस के कारण होती है। और इसकी रोकथाम के लिए नर्सरी वाले पौधों पर स्पिनोसेड/60 मि.ली. की स्प्रे 8 दिनों के फासले पर करें।

बेल की तितली: यह बेक्टोसेरा जोनाटा के कारण होती है।

पत्तें खाने वाली सुंडी: यह सुंडी नये पौधे निकलते समय ज्यादा नुकसान करती है और इसकी रोकथाम के लिए थियोडेन 0.1: डालें।

बेल की बीमारियां और उनकी रोकथाम

फलों पर गांठें पड़ना: यह बीमारी बेल में जेथोमोनस बिलवई कारण होती है। और यह बीमारी पौधे के हिस्सों, पत्तों और फलों पर धब्बे डाल देती है। और इसकी रोकथाम के लिए दो–मुँह वाली टहनियों को छाँट दें और नष्ट कर दें या स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट 20 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3%) 10–15 दिनों के अंतराल पर डालें।

फलों का फटना और गिरना – यह दोनों बीमारियां फल की बनावट को बिगाड़ देती है। और इसकी रोकथाम के लिए बोरेक्स 0.1: दो बार फूल के खिलने पर और फल के गुच्छे बनने के समय डालें।

पत्तों पर सफेद फंगस: यह बीमारी भी बेल की फसल में आम पायी जाती है और इसकी रोकथाम के लिए घुलनशील सल्फ़र्क्लोरपाइरीफोस या पैराथियाऩगम एकेशियाँ (0.20.10.3:) की स्प्रे करें।

फलों की तुड़ाई –

बेल के फल अप्रैल–मई माह में तोड़ने योग्य हो जाते है। और जब फलों का रंग गहरे हरे रंग से बदलकर पीला हरा होने लगे तो फलों की तुड़ाई 2 सें.मी. डंठल के साथ करनी चाहिए और बेल को तोड़ते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि फल जमीन पर न गिरने पाये नही तो इससे फलों की त्वचा चिटक जाती है, और जिससे फल भीतर से सड़ने लग जाते है।

उपयोग

बेल एक बहुत ही लाभकारी फल है और इसके अधिकाधिक उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। और कच्चे फलों को मुरब्बा एवं कैंडी, या भुनकर खाने से पेचिश, भूख न लगना एवं अन्य पेट के विकारों से छुटकारा पाया जा सकता है और पके बेल के गूदे के पाउडर के प्रतिदिन दूध के साथ लेने से पुरानी जीर्ण संग्रहनी में लाभ पाया जा सकता है। और गर्मी के मौसम में नियमित सेवन या शरबत बना कर सेवन अत्यंत लाभकारी होता है।